मथुरादास की डायरी • मुद्राराक्षस

जगतराम एण्ड सन्स
मेन बाजार, गांधी नगर, दिल्ली-110031

© मुद्राराक्षस

प्रकाशक
जगतराम एण्ड संस
IX/221, मेन बाजार, गांधीनगर
दिल्ली-110031

प्रथम संस्करण
1992

मूल्य
पचास रुपये

मुद्रक
अजय प्रिंटर्स
नवीन शाहदरा, दिल्ली-110032

MATHURADAS KI DIARY (Humour & Stire)
by Mudrarakshas
Price : Rs. 50.00

अनुक्रम

परनिंदा सुख उर्फ एरिस्ट्रोक्रेट झाड़ू	7
पुरस्कार प्रसंग	10
सावधान ! आगे जनवादी रेजोमेंट है	14
अध्यक्षता का आनन्द	19
अथ श्री दिल्ली पुलिस पुराणम्	23
काशी विश्वनाथ : शासकीय नियमावली	27
विधायक बिकाऊ हैं···!	32
आलोचना के खतरे	37
ऋणंकृत्वा चर्बी पिवेत	41
पड़ता सिद्धान्त	46
चुनाव चक्र और एकता	51
उत्तर प्रदेश का कीर्तिमान	55
व्यंग्यकार की मेख	59
गरीबी की रेखा के इधर और उधर	64
समीक्षा सुख	68
टेढ़ा उल्लू	72
बड़ा क्या है : सच्चा सुख या सत्ता सुख	77
हिन्दी की शुभचिन्तक	82
ब्लैड युग की साहित्यिक हरकतें	87
बड़े बनने का गुर !	91
भारत भवन से मथुरादास की अपील	96
कम्प्यूटर क्रान्ति	101
उपदेशक की जमीन	105

सावधान ! आगे जनवादी रेजीमेंट है

इन दिनों जनवादी रेजीमेंट की भरती चालू है। इसमें विशेषता यह है कि साहित्य में पिछड़े वर्ग को भारी आरक्षण की सुविधा मिलेगी। साहित्य-वाहित्य लिखने की कोई खास शर्त नहीं है। आयु सीमा में भी छूट मिल सकती है।

जनवाद के जोश में अमृतराय ने एक बार प्रेमचंद को कलम का सिपाही बना दिया था। हम प्रेमचंद की परम्परा को आगे बढ़ाएँगे। अब खाली सिपाही से काम नहीं चलेगा। हम कलम का हवलदार, मेजर भी बनाएँगे और कलम का दारोगा भी नियुक्त करेंगे।

इस पुलिसीकरण से एक बहुत बड़ा लाभ होगा। साहित्य में अभी लोग गोष्ठियों की तरफ भागते हैं। आगे से 'रौंद' हुआ करेगी। रौंद पर घूमते रमेश कुन्तल मेघ आपसे पूछ सकते हैं—"कौन हो, यहाँ क्या कर रहे हो? चलते-फिरते नजर आओ।"

आप उन्हें साहित्य का कोतवाल न समझ बैठें। वे तो दरोगा मात्र होंगे। कोतवाल साहब का कैम्प ऑफिस मथुरा में है। हेडक्वार्टर अज्ञात है।

आप इस फोर्स को सी० आर० पी० से कम न समझिएगा। इसकी अपनी व्यवस्था बड़ी दूरदर्शिता से बनाई गई है। जनवादी रेजीमेंट में एक सिग्नल कोर भी है, मगर इसमें रिक्तियाँ भरी जा चुकी हैं। आपके प्रार्थना-पत्र बेकार होंगे। कर्णसिंह चौहान और सुधीश पचौरी काम सँभाले हुए हैं। झण्डी हिलाकर आपको दिखाएँगे और इशारा देंगे सव्य साची को। वे बात भी कोड की भाषा में करेंगे, यानी जब वे कहें कि पूँजीवादी व्यवस्था को हटाना है तो आपको होशियार हो जाना चाहिए, क्योंकि उनका मतलब होगा लड़ाई सेठ के खिलाफ नहीं साहित्यकारों के खिलाफ शुरू हो गई है। अगर आप समय रहते सावधान नहीं हो गये तो आप पर जुझारू साहित्य

छोड़ा जा सकता है।

जुझारू साहित्य से आपको डरना चाहिए। आपको समझ लेना चाहिए कि आसपास कहीं बहुत हल्ला मच रहा है तो वहाँ या तो जुझारू साहित्य होगा या किसी ने सरकारी जमीन पर मन्दिर बनाकर कीर्तन शुरू कर दिया होगा।

यह जनवादी सेना बहुत-से स्तरों पर काम करेगी। वह साहित्य के ट्रैफिक का नियन्त्रण भी करेगी और कुँवरनारायण का चालान जरूर होगा। मोटर का बच जाये, कविता का चालान होगा ही। इस सेना के इन्स्पेक्टर समय-समय पर दूकानों की जाँच-परख करेंगे। हो सकता है कि वे कमलेश्वर या महीपसिंह की दूकानों से सैम्पल भर-भर लायें। वे छापा भी मार सकते हैं। मुमकिन है कि जनवादियों को चकमा देने के लिए आप राजेन्द्र यादव की तरह भीड़ में घुस लिये हों। ऐसी स्थिति में रमेश कुन्तल मेघ छापा मारकर 'उखड़े हुए लोग' बरामद कर सकते हैं। लोगों को ऐसी कृतियाँ रखने की कतई इजाजत नहीं होगी जिनको लिखने का लाइसेंस न लिया गया हो।

यह न समझिए कि आपने लाइसेंस बनवा लिया तो आप लिखते ही चले जाएँगे। सरकार जिन वस्तुओं को ठीक मानती है उन्हें 'आई० एस० आई०' की मुहर लगा देती है। घी का कनस्तर आप मुहर देखकर ही खरीदते हैं। हाथरस से जो नौटंकियाँ छपती हैं उन पर लिखा होता है—बिना मुहर की किताब चोरी की समझी जाएगी।

आपकी किताब पर भी मुहर जरूरी होगी। वैसे थोड़ी-बहुत छूट आप निजी रिस्क पर ले सकते हैं। मुहर लगाने वाले को अगर आप पटा सकें तो मेघजी की विपत्ति आसानी से टाल भी सकते हैं। पटाने के तरीके पारम्परिक ही हैं, इसलिए आपको घबराने की जरूरत नहीं है। बल्कि ये तरीके कुछ ज्यादा ही पारम्परिक हैं। बस आपको सिर्फ तारीफ करने की आदत डालनी होगी। तारीफ करने का जनवादी तरीका बहुत आसान है। 'इसके लिए' और 'को' दो अदद नाम और तीन अदद शब्द सीखने होंगे, यानी मान लीजिए आपको पोपटलाल की तारीफ करनी है। अब आप यह मत पूछिए कि पोपटलाल क्या हैं और वे क्या लिखते हैं? वे जनवादी हैं बस। तो जनाब

पोपटलाल जनवादी की तारीफ कुछ इस तरह करनी होती है—

प्रेमचन्द किसानों और मजदूरों के अगुआ थे। हमें मुक्तिबोध की परम्परा को आगे बढ़ाना है। साहित्य में पूँजीवादी, साम्राज्यवादी, प्रतिक्रियावादी हमला जारी है। पोपटलाल इसीलिए इतिहास में याद रखे जाएँगे।

इस जनवादी रेजीमेंट का एक छापामार दस्ता भी है। यह बहुत फुर्तीला होता है और कहाँ, कब, किस रूप में प्रकट हो जाएगा, आप यह नहीं जान सकते। कभी-कभी आपको एक सन्नाटा-सा महसूस होगा और आपको लगेगा यहाँ आसपास किसी साहित्यकार के होने की कोई गुंजाइश नहीं है। ऐसे में आप इत्मीनान की साँस लेना चाहेंगे। बस यहीं यह दस्ता अपनी कारगुजारी दिखा देगा। वह दो-चार जुझारू कविताएँ आपके सिर पर दे मारेगा और फिर गायब हो जाएगा।

अगर आप साहित्य में घुसपैठ अपने लिए थोड़ा कठिन पा रहे हैं तो इस छापामार दस्ते के उम्मीदवार हो सकते हैं। इस दस्ते को जुझारू साहित्य चलाने की शिक्षा दी जाती है। भर्ती के लिए आपको दो-तीन प्रमाणपत्र पेश करने होंगे। पहला प्रमाणपत्र इस बात का होना चाहिए कि आप पर शासन ने घोर अत्याचार किया है। यानी अच्छी नौकरी देने से इन्कार कर दिया और दूसरा प्रमाणपत्र अक्सर साथ लेकर घूमना होगा। इस सर्टीफिकेट को आप माचिस से जलाकर कॉफी हाउस के बीचोंबीच सिगरेट में पियें। इसका तत्काल प्रभाव होगा। अधिक ऊँचा स्थान पाने के लिए आप किसी हिप्पी लड़की को साथ लेकर चल सकते हैं। इससे साहित्य का जुझारूपन बढ़ता है।

जनवादी सेना का विश्वास है कि जुझारू साहित्य लड़ाई का हथियार होता है। यह बात सच है। यह एक ऐसा हथियार है जिसे चलाने के बाद यह जरूरी होता है कि सिपाही तुरन्त कुछ गालियाँ बक दे। इनके बिना हथियार में जोर नहीं रह जाता। इन गालियों का कुछ वैसा प्रभाव होता है जैसा रॉकेट में ठोस ईंधन का। हाँ, गालियों के लिए यह जरूरी नहीं है कि वे उसी के नाम हों जिस पर जुझारू साहित्य छोड़ा जाए। आप जुझारू साहित्य धर्मवीर भारती पर छोड़िए और गालियाँ फणीश्वरनाथ रेणु को दे

दीजिए तो भी काम चल जाएगा।

'ईस्ट इण्डिया कम्पनी' ने कभी फौजियों को ऐसी कारतूसें दी थीं जिन्हें दागने से पहले दाँत से काटना पड़ता था। जुझारू साहित्य के साथ स्थिति कुछ बेहतर है, यानी इसमें पहले आप जुझारू साहित्य छोड़ दीजिए और इन्तजार कीजिए। अगर दुश्मन का कुछ नहीं बिगड़ा है तो कारतूस की बजाय जैनेन्द्र कुमार को दाँत से काट लीजिए।

वैसे तो इस देश से छापामारों ने अमरूद दिखाकर विमान अपहरण तक करने में सफलता प्राप्त की है, लेकिन जुझारू साहित्य यह काम नहीं कर सकता। जुझारू साहित्य दिखाकर आप विमान क्या साइकिल का अपहरण भी नहीं कर सकते। इसलिए वह करने की कोशिश न करें।

तो इस तरह जनवादी रेजीमेंट का गठन चालू है और जल्दी ही वह काम करना शुरू कर देगी। इसका काम मौके-बेमौके लोगों का चालान करना तो होगा ही। इसके द्वारा बड़े अभियान भी किये जा सकते हैं। यानी कहीं बहुत बड़ा अकाल या सूखा पड़ जाने की हालत में यह रेजीमेंट एक गोष्ठी कर सकती है। ऐसी आपातकालीन गोष्ठियों में प्रेमचेन्द की परम्परा थोड़ी और आगे बढ़ाने के बाद एक सम्मेलन कर डालने की कसम खाई जाती है।

वर्ग शत्रु इतने प्रबल हैं कि गोष्ठी और सम्मेलन से कम पर हराये नहीं जा सकते। दरअसल प्रेमचंद और मुक्तिबोध की परम्परा को वर्ग शत्रुओं से भयंकर खतरा पैदा हो गया है और किसान-मजदूर की रहनुमाई का मौका इन्दिरा गांधी से बचे तो चरणसिंह के हाथ लग जाता है। ऐसी हालत में जनवादी गोष्ठियाँ शत्रुओं के खेमे में भगदड़ पैदा कर देंगी, यह निश्चित है।

जनवादी रेजीमेंट इस खतरे के प्रति भी सावधान है कि व्यापक जनान्दोलन को कुचलते के लिए विदेशी साम्राज्यवादी शक्तियाँ निरन्तर काम कर रही हैं। उन्होंने वामपंथी आन्दोलन को विभाजित करने की साजिश चला रखी है। इस साजिश को जनवादी रेजीमेंट कतई सफल नहीं होने देगी और ऐसे हर जनवादी का विरोध करेगी जो इस रेजीमेंट में नहीं है।

आपको पता ही होगा कि हर रेजीमेंट का एक झण्डा होता है और एक

आत्मवचन होता है। जनवादी ब्रिगेड का झण्डा थोड़ा गोपनीय है। झण्डा फहराया तो जाता है, मगर गोष्ठी शुरू होने से पहले उतार लिया जाता है। बाद में ब्रिगेड सिर्फ डण्डे से काम चलाता है। आत्मवचन 'गैंग ऑव फोर' का फैसला होने तक अभी अनिश्चित है। 'गैंग ऑव फोर' वो बीजिंग वाला नहीं, हिन्दुस्तान वाला यानी—खैर छोड़िए। हमें क्या लेना-देना! वैसे आप अपनी सुविधा और संभावनाएँ देखकर अगर जनवादी रेजीमेंट में भर्ती होना चाहें तो अभी वक्त है।

अध्यक्षता का आनन्द

मित्रो, देश की हालत बहुत खराब है। अवधनारायण मुद्गल अध्यक्षता करने लगे हैं। किसी जमाने में भारतेन्दु भारत-दुर्दशा से बहुत दुखी हुए थे। मैं उनसे कुछ ज्यादा ही दुखी हूँ। आखिर लोगों को यह क्या होता जा रहा है? अच्छा-भला आदमी देखते-देखते कब यकायक आपके बीच से उठेगा और किंचित मुदित, गौरवांदोलित पदन्यास के साथ जाकर अध्यक्ष की कुर्सी पर बैठ जायगा, आप नहीं जान सकते।

अध्यक्ष की कुर्सी पर बैठकर वह सबसे पहले यह कहेगा कि वह इस पद के योग्य नहीं है; किन्तु दूसरे को अपने फैसले पर पुनर्विचार करने का अवसर दिये बगैर कुर्सी पर इस तरह धँसेगा जैसे अध्यक्ष के अलावा वह कभी कुछ बना ही नहीं।

मेरा खयाल है कि इस विषय में कुछ शोधकार्य होना चाहिए। विश्व-विद्यालयों को चाहिए कि वे कवि पन्त में नारी भाव और प्रेमचंद का चरित्र-चित्रण जैसे विषयों के बजाय अब कुछ इस तरह के विषयों पर अनुसन्धान करें जैसे 'भारतीय राजनीति में अध्यक्षता रोग के विषाणु', 'हिन्दी साहित्य में अध्यक्ष परम्परा', 'अध्यक्षता : एक मनोवैज्ञानिक अध्ययन' आदि।

मैंने कुछ अध्यक्षता के रोगी देखे हैं। उनकी हालत बड़ी खराब होती है। मादक द्रव्य लेने वाले से कम बुरी हालत नहीं होती। ज्यादा दिन बिना अध्यक्षता के रहना पड़े तो आदमी बुझा-बुझा, कुछ सूखा-सा और हताश दिखने लगता है। मुहल्ले के सत्संग की ही अध्यक्षता ऐसे वक्त में मिल जाय तो चेहरे पर रंगत आ जाती है। अक्सर वे मुहल्ला सुधार समिति की अध्यक्षता करके भी आनन्दित हो लेते हैं। यह अध्यक्षता सुख ऐसा दिव्य सुख है कि इसके लिए लोग पर्याप्त धनराशि भी खर्च करने में हिचकते नहीं। कभी-कभी वे समूचे आयोजन का खर्च सिर्फ इसलिए बड़ी उदारता